समाधिमरण पाठ

(कविवर पण्डितप्रवर श्री शिवलालजी)

परम पंच परमेष्ठी का ध्यान धर,
परमब्रह्म का रूप आया नजर।
परमब्रह्म की मुझको आई परख,
हुआ उर में संन्यास का जब हरख ॥1॥

लगन आत्मा राम सों लग गई,
मेरी मोह निद्रा सभी भग गई।
लगी दृष्टि चेतन चिद्रूप पर,
टिकी ब्रह्म के ज्ञान के रूप पर ॥2॥

परमब्रह्म की अब रटारट मेरे,
निजानन्द रस की गटागट मेरे।
यहाँ आज रोने का क्या शोर है,
मेरे हर्ष-आनन्द का जोर है ॥3॥

निरंजन की कथनी सुनाओ मुझे,
नहीं और बतियाँ बताओ मुझे।
न रोओ मेरे पास इस वक्त में,
मैं तिष्ठा हूँ खुशहाल खुश वक्त में ॥4॥

जरा रोने का अब तअम्मुल[1] करो,
नजर मेहरबानी[2] की मुझ पर धरो।
उठो अब मेरे पास से सब कुटुम्ब,
तजा मोह मिथ्यात का भय विडम्ब ॥5॥

---

१. विराम; २. कृपा

जरा आत्मा भाव उर आने दो,
परम ब्रह्म की लय मुझे ध्याने दो।
मुझे ब्रह्मचर्चा से वर्ते हुलाश[1],
करो और चर्चा न कुछ मेरे पास ॥6॥

जो भावे तुम्हें सो न भावे मुझे,
न झगड़ा जगत का सुहावे मुझे।
ये काया पे पुटकी[2] पड़ी मौत की,
याद आई है शिवलोक के नाथ की ॥7॥

यह देह चिरकाल से है मुई[3],
मेरी जिन्दगानी से जिन्दा भई।
तजा हमने नफरत से यह मुर्दा आज,
चलो यार चलकर करें मुक्तिराज ॥8॥

जिसमें[4] झोपड़ी को लगी आग जब,
हुई मेरे वैराग्य की जाग तब।
संभाले ये अपने रतन मैंने तीन,
लिया अपने आपको मैं आप चीन्ह ॥9॥

जिसे मौत है उसको मुझको है क्या?
मुझे तो नहीं फिर भय मुझको क्या?
मेरा नाम तो जीव है जीव हूँ,
चिरंजीव चिरकाल चिरंजीव हूँ ॥10॥

अखंडित अमंडित अरूपी अलख,
अदेही अगेही अनेही निरख।
परम ब्रह्मचर्य परम शान्तितम,
निरालोक लोकेश लोकोत्तम ॥11॥

---

१. उत्साह; २. पोटली; ३. मृत; ४. शरीर

परमज्योति परमेश परमात्मा,
परमशुद्ध परमसिद्ध शुद्धात्मा।
चिदानन्द चैतन्य चिद्रूप हूँ,
निरंजन निराकार शिवभूप हूँ ॥12॥

ये देह तज कर चले आज हम,
चिता में धरो इसको ले जाके तुम।
कहीं जाओ यह देह क्या इससे काम,
तजी इससे रगवत[1] मोहब्बत तमाम ॥13॥

मुवे संग रहकर बहुत कुछ मुये[2],
मगर आज निरगुण निरंजन भये।
मिली आज संन्यास की यह घड़ी,
मेरे हाथ आई ये अद्‌भुत जड़ी ॥14॥

विषयविष से निर्विष हुआ आज मैं,
चलाचल से निश्चल हुआ आज मैं।
परम भाव अमृत पिया आज मैं,
नर भव का लाहा[3] लिया आज मैं ॥15॥

घटा आत्म उपयोग की आई झूम,
अजब तुर्फ तुरियाँ बनी रंगभूमि।[4]
शुक्लध्यान टाली[5] की टंकोर[6] है,
निजानन्द झांझन[7] की झंकोर है ॥16॥

अजर हूँ अमर हूँ न मरता कभी,
चिदानन्द शाश्वत् न डरता कभी।
कि संसार के जीव मरते डरें,
परम पद का 'शिवलाल' वन्दन करें ॥17॥

---

१. लगाव; २. मृतक शरीर के लगाव से बहुत मरे हैं; ३. लाभ; ४. विचित्र समस्याओं की रंगभूमि बन गयी; ५. घण्टी; ६. घण्टनाद; ७. पायल